Think IAS...

दृष्टि *The Vision*

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

प्राचीन भारत

(राजस्थान के विशेष संदर्भ सहित)

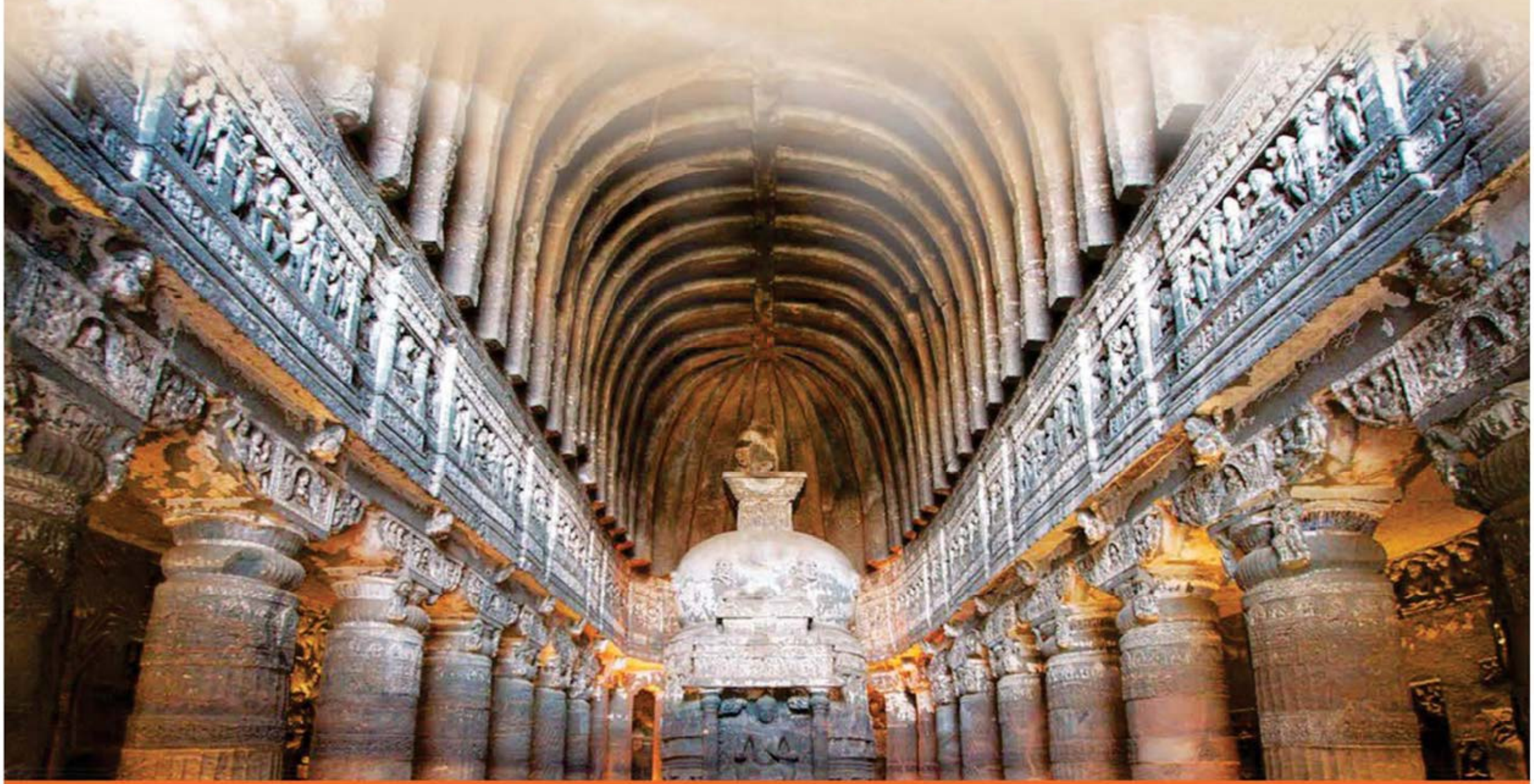

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM16

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

प्राचीन भारत

(राजस्थान के विशेष संदर्भ सहित)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत **5-16**
- 1.1 पुरातात्त्विक स्रोत 7
- 1.2 साहित्यिक स्रोत 9
- 1.3 विदेशी यात्रियों के वृत्तांत/विवरण 10
- 1.4 राजस्थान इतिहास के स्रोत 11

2. पाषाणयुगीन संस्कृति **17-25**
- 2.1 पुरापाषाण काल 17
- 2.2 मध्य पाषाण काल 18
- 2.3 नवपाषाण काल : कृषि और पशुपालन 20
- 2.4 राजस्थान का पाषाणकाल 22

3. सिंधु घाटी की सभ्यता **26-42**
- 3.1 उद्‌भव एवं विस्तार 26
- 3.2 सैंधव सभ्यता का नगर नियोजन 28
- 3.3 सैंधवकालीन आर्थिक व्यवस्था 30
- 3.4 सैंधव सभ्यता में धार्मिक जीवन 31
- 3.5 सैंधवकालीन सामाजिक जीवन 31
- 3.6 प्रौद्योगिकी, कला एवं शिल्प 32
- 3.7 हड़प्पा सभ्यता का पतन 33
- 3.8 ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ 34
- 3.9 राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ 36

4. वैदिक काल **43-56**
- 4.1 ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.–1000 ई.पू.) 43
- 4.2 उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.–600 ई.पू.) 49

5. छठी शताब्दी ई.पू. का काल (महाजनपद काल) **57-74**
- 5.1 धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म 57
- 5.2 महाजनपद तथा मगध का उत्थान 65
- 5.3 ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण 69

6. मौर्य साम्राज्य **75-95**
- 6.1 चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक 76

6.2 मौर्य साम्राज्य की प्रकृति 82
6.3 मौर्य प्रशासन 83
6.4 मौर्यकालीन समाज 86
6.5 मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था 87
6.6 मौर्यकालीन कला 88
6.7 पतन के कारण 89

7. मौर्योत्तर काल **96-108**
7.1 शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश 96
7.2 हिंद-यवन या बैक्ट्रियाई आक्रमण 98
7.3 शक शासक 99
7.4 पह्लव वंश या पार्थियन साम्राज्य 99
7.5 कुषाण शासक 100
7.6 मौर्योत्तरकालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन 100
7.7 मौर्योत्तरकालीन समाज 101
7.8 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 102
7.9 मौर्योत्तरकालीन कला एवं साहित्य 104

8. संगम काल **109-115**
8.1 संगम साहित्य 110
8.2 शासन व्यवस्था 111
8.3 सामाजिक स्थिति 112
8.4 अर्थव्यवस्था 112

9. गुप्त साम्राज्य **116-131**
9.1 प्रारंभिक शासक 116
9.2 गुप्त प्रशासन 118
9.3 गुप्तकालीन समाज 119
9.4 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था 120
9.5 गुप्तकालीन साहित्य 121
9.6 कला एवं स्थापत्य 122
9.7 स्वर्णयुग की अवधारणा 124
9.8 पतन के कारण 126

10. गुप्तोत्तर काल **132-148**
10.1 प्रमुख राजवंश 132
10.2 गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक स्थिति 137
10.3 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था 138
10.4 गुप्तोत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 138
10.5 गुप्तोत्तरकालीन धर्म 138

अध्याय
1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Ancient Indian History)

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है। उसके लिये साहित्यिक सामग्री, पुरातात्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के वर्णन सभी का महत्त्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णत: शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशों की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए, अत: कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह मानसिक धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी। लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल होगी। वस्तुत: प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णत: अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कारण-कार्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करते थे जिनमें आम जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो संकल्पना दी गई है उससे भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना उद्‌भाषित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसीलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था, किन्तु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे, जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। अत: भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस भी उतना ही महत्त्व रखता है जितना कि सम्राटों अथवा साम्राज्यों का उत्थान और पतन। वह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनों का विश्लेषण एवं अध्ययन करता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अत: प्रसिद्ध इतिहासकार कोसांबी के अनुसार, "उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक संबंधों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है।" उनके अनुसार इसके आधार पर हम यह जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार अपना जीवन-यापन करता था।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है-

1. **प्रागैतिहासिक काल:** वह काल जिसका कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं हैं और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत सभ्य नहीं था। हड़प्पा सभ्यता से पूर्व का भारतीय इतिहास इसी श्रेणी में आता है।
2. **आद्य-ऐतिहासिक काल:** भारतीय इतिहास का वह काल जिसमें लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, लेकिन वे गूढ़ लिपि में हैं और जिनका अर्थ अभी नहीं निकाला जा सका है। हड़प्पा सभ्यता की गणना इसी काल के अंतर्गत होती है।
3. **ऐतिहासिक काल:** वह काल जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। लगभग 600 ई.पू. के बाद का काल '**ऐतिहासिक काल**' कहलाता है।

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहासकार को पूर्णतया पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य-ऐतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय वह पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा ऐतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय वह इन दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के वर्णनों का प्रयोग करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन हैं लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेष का ठीक-ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अत: हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को तीन शीर्षकों में रख सकते हैं-

- पुरातात्विक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत
- विदेशी यात्रियों के विवरण।

- **ख्यात साहित्य :** यह इतिहास की जानकारी प्रदान करता है। जैसे–
  - **नैणसी री ख्यात :** मुहणोत नैणसी द्वारा लिखित, जिसमें राज्यों के मध्य परस्पर संघर्ष, राजपूत राज्यों द्वारा मुगलों से लड़े गए युद्धों का वर्णन तथा शासकों की विभिन्न शाखाओं पर प्रकाश डाला गया है।
  - **बाँकीदास री ख्यात :** जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि बाँकीदास द्वारा रचित, जिसमें जोधपुर की स्थापना का वर्णन है।
  - **दयालदास री ख्यात/बीकानेर रे राठौड़ाँ री ख्यात :** राव बीका से महाराज सरदार सिंह के समय तक का वर्णन, बीकानेर की स्थापना, इसका अन्य शक्तियों से संघर्ष, बीकानेर के शासकों व सामंतों के संबंधों का उल्लेख।
  - **मुंडियार री ख्यात/राठौड़ों री ख्यात :** मारवाड़ के मुगलों के साथ संबंधों, सभी शासकों के जन्म, राज्याभिषेक, मृत्यु का उल्लेख, चारण जाति के व्यक्ति द्वारा रचित।
  - **कविराजा की ख्यात :** जोधपुर महाराज जसवंत सिंह प्रथम के शासनकाल तक का वर्णन।
- **राजस्थानी भाषा के अन्य ऐतिहासिक स्रोत :** पद्मावत, कान्हड़दे प्रबंध, राजविलास, सूरज प्रकाश, बुद्धिविलास, वंशभास्कर, वीर सतसई, राजरूपक, दलपत विलास, तारीख-ए-मुबारकशाही, गज गुणारूपक, अकबरनामा, आईन-ए-अकबरी, तारीखे शेरशाही, बाबरनामा इत्यादि।
- **फारसी-उर्दू साहित्य :** अमीर खुसरो रचित खजाइनुल फुतुह, पृथ्वीराज राठौड़ रचित वेलि क्रिसन-रुक्मणी री, बीठू सूजा रचित राव जैतसी रो छंद, सदरउद्दीन हसन निज़ामी रचित ताज-उल-मासिर, गुलबदन बेगम रचित हुमायूँनामा, मिनहाज-उस-सिराज रचित तबकाते नासिरी, मोहम्मद कासिम हिंदूशाह द्वारा रचित तारीख-ए-फरिश्ता, जहाँगीर रचित तुजुक-ए-जहाँगीरी इत्यादि।
- **संस्कृत साहित्य :** नयनचंद्र सूरी रचित हम्मीर महाकाव्य, कुंभा के शिल्पी मंडन रचित राजवल्लभ, कान्ह व्यास रचित एकलिंग माहात्म्य, कवि जयानक रचित पृथ्वीराज विजय, रणछोड़ भट्ट रचित अमर काव्य वंशावली, पं. जीवधर रचित अमर सार, जैसलमेर के वर्णन हेतु मादी काव्य, सदाशिव रचित राजविनोद, कुंभा रचित मुख्य राजकोष, जगजीवन भट्ट रचित आजितोदय, करमचंद रचित वंशोत्कीर्तनकाव्यम् इत्यादि।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के मुख्यत: तीन स्रोत हैं- **पुरातात्त्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोत** तथा **विदेशी यात्रियों के विवरण।**
- अभिलेखों के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी)** कहते हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर मिलते हैं, ये लगभग 2500 ई.पू. के हैं। ये अब तक नहीं पढ़े जा सके हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं वे हैं, ई.पू. तीसरी सदी के **अशोक के शिलालेख।** सर्वप्रथम 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** ने इन्हें पढ़ने में सफलता पाई।
- सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स)** कहते हैं।
- सर्वप्रथम **भारतवर्ष** का उल्लेख **हाथीगुंफा** अभिलेख में हुआ है।
- 1400 ई.पू. के **बोगाज़कोई अभिलेख** से वैदिक देवता **इंद्र, मित्र, वरुण** और **नासत्य** (अश्विनी कुमार) के नाम मिलते हैं।
- मध्य भारत में भागवत् धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत **'हेलियोडोरस' के बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तंभ लेख** से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख **सोहगौरा** ताम्रपत्र अभिलेख है।
- भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी **भीतरी स्तंभ लेख** से प्राप्त होती है।
- सती प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य **एरण अभिलेख** (शासन भानुगुप्त) से प्राप्त होता है।

- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- सर्वप्राचीन भारतीय धर्मग्रंथ **वेद** हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- सबसे प्राचीन वेद **ऋग्वेद** एवं सबसे बाद का वेद **अथर्ववेद** है।
- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण **पुराणों में** मिलता है। इनकी संख्या **18** है।
- पुराणों में **मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक** है।
- स्मृतियों में **सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक 'मनुस्मृति'** मानी जाती है। यह **शुंग काल** का मानक ग्रंथ है।
- जातक में **बुद्ध के पूर्वजन्म** की कहानी वर्णित है। जैन साहित्य को **आगम** कहा जाता है।
- **अर्थशास्त्र** के लेखक **चाणक्य (कौटिल्य)** थे। इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- प्रमुख यूनानी-रोमन लेखकों में **टीसियस**, **हेरोडोटस**, **मेगास्थनीज**, **टॉलमी**, **प्लिनी** आदि हैं।
- हेरोडोटस को **'इतिहास का पिता'** कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक **हिस्टोरिका** में 5वीं शताब्दी ई.पू. के भारत-फारस के संबंधों का वर्णन है।
- टॉलमी ने दूसरी शताब्दी में **'भारत का भूगोल'** नामक पुस्तक लिखी।
- प्रमुख चीनी लेखकों में **फाह्यान**, **संयुगन** (518 ई. में भारत आया) व **ह्वेनसांग** हैं। **ह्वेनसांग** का भ्रमण-वृत्तांत **'सि-यू-की'** नाम से प्रसिद्ध है। ह्वेनसांग ने **हर्षकालीन** समाज, धर्म तथा राजनीति के बारे में वर्णन किया है।
- ह्वेनसांग के अध्ययन के समय नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य **शीलभद्र** थे।
- अरबी लेखकों में **अलबरूनी** (पुस्तक: **किताब-उल-हिन्द**) और **इब्नबतूता** (पुस्तक: **रेह्ला/रिह्ला**) प्रमुख हैं।
- मध्यमिका (नगरी) का उल्लेख प्राचीन ग्रंथ महाभारत और महाभाष्य दोनों में है।
- राजशेखर महेंद्रपाल-I के दरबार में प्रसिद्ध कवि व नाटककार थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्राचीन नगर जो महाभारत और महाभाष्य दोनों में उल्लेखित है- **RAS (Pre) 2016**
   (1) विराटनगर (बैराठ) (2) मध्यमिका (नगरी)
   (3) रैंढ (4) कर्कोट

2. अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत संप्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है: **RAS (Pre) 2016**
   (1) घटियाला अभिलेख
   (2) हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख
   (3) बुजकला अभिलेख
   (4) घोसुंडी अभिलेख

3. महान संस्कृत कवि एवं नाटककार राजशेखर निम्न में किसके दरबार से संबंधित था? **RAS (Pre) 2013**
   (1) राजा भोज (2) महिपाल
   (3) महेंद्रपाल-I (4) इंद्र तृतीय

4. भारतीय इतिहास को जानने के साधनों में सम्मिलित तत्त्व है/हैं-
   (i) पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य
   (ii) साहित्यिक साक्ष्य
   (iii) विदेशी यात्रियों के विवरण
   कूट:
   (1) केवल (i) और (ii) (2) केवल (ii) और (iii)
   (3) केवल (i) और (iii) (4) (i), (ii) और (iii)

5. भारतीय इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्रोत का विशेष महत्त्व है, क्योंकि-
   (i) भारतीय इतिहास से संबद्ध ग्रंथों का रचनाकाल स्पष्ट नहीं है, इसलिये उनसे किसी काल विशेष की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है।
   (ii) साहित्यिक साक्ष्यों का दृष्टिकोण भी इतिहास का पूर्णतः सही वर्णन करने में असमर्थ है।
   (iii) ग्रंथों की प्रतिलिपि करने वालों ने भी अपनी इच्छानुसार अनेक विद्यमान महत्त्वपूर्ण तथ्यों के स्थान पर नए तथ्य जोड़ दिये।
   कूट:
   (1) केवल (i) और (ii) (2) केवल (ii) और (iii)
   (3) केवल (i) और (iii) (4) (i), (ii) और (iii)

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   (i) प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगाजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं, जिन पर वैदिक देवता के नाम मिलते हैं।
   (ii) भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख चंद्रगुप्त मौर्य के हैं।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (1) केवल (i) (2) केवल (ii)
   (3) (i) और (ii) दोनों (4) न तो (i) और न ही (ii)
7. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा असत्य है?
   (1) मध्य एशिया के बोगाज़कोई से प्राप्त अभिलेख लगभग 1400 ई.पू. का है।
   (2) बोगाज़कोई अभिलेख से ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
   (3) अशोक के सभी अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
   (4) मास्की तथा गुर्जरा से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
8. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये-

सूची-I (अभिलेख)	**सूची-II (शासक)**
A. हाथीगुंफा अभिलेख	(i) गौतमी बलश्री
B. नासिक अभिलेख	(ii) स्कंदगुप्त
C. भितरी स्तंभ लेख	(iii) खारवेल
D. ऐहोल अभिलेख	(iv) पुलकेशिन द्वितीय

   कूट:

	A	B	C	D
(1)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(2)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(3)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(4)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

9. भारतीय इतिहास के पुरातात्विक साक्ष्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें–
   (i) कुछ अभिलेख पाषाण या स्तंभों पर खुदे हैं तथा उनके प्राप्ति स्थलों से वहाँ के शासक के राज्य की सीमाओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है।
   (ii) सभी उत्कीर्ण अभिलेखों पर उनकी तिथि अंकित नहीं है, फिर भी अक्षरों की बनावट के आधार पर उनका समय मोटे तौर पर निर्धारित हो जाता है।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (1) केवल (i) (2) केवल (ii)
   (3) (i) और (ii) दोनों (4) न तो (i) और न ही (ii)
10. ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम किस विद्वान ने पढ़ा था?
   (1) दयाराम साहनी (2) राखालदास बनर्जी
   (3) जेम्स प्रिंसेप (4) माधवस्वरूप वत्स
11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   (i) गुप्तकाल से पहले के अधिकतर अभिलेख प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध हैं और उनमें ब्राह्मणेतर धार्मिक समुदायों का उल्लेख है।
   (ii) गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत भाषा में हैं और उनमें ब्राह्मण धर्म का विशेष उल्लेख है।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (1) केवल (i) (2) केवल (ii)
   (3) (i) और (ii) दोनों (4) न तो (i) और न ही (ii)
12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   (i) दक्षिण भारत के पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पांड्य और चोल वंशों का इतिहास लिखने में यहाँ के शासकों के अभिलेख बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हुए हैं।
   (ii) उत्तर भारत के मंदिरों की कला-शैली 'नागर शैली' का उदाहरण है।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (1) केवल (i) (2) केवल (ii)
   (3) (i) और (ii) दोनों (4) न तो (i) और न ही (ii)
13. निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है?
   (i) सिक्कों के अध्ययन को 'न्यूमिस्मेटिक्स' कहते हैं।
   (2) हड़प्पा काल में धातु मुद्रा की जगह मुहरों और मनकों का प्रचलन था जिससे व्यापार प्रणाली संचालित होती थी।
   (3) जावा का प्रसिद्ध स्मारक 'बोरोबुदूर' इस बात का प्रमाण है कि 9वीं शताब्दी में वहाँ बौद्ध धर्म अतिलोकप्रिय हो गया था।
   (4) चालुक्य, राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पल्लव वंश के शासकों के सिक्के बहुतायत में मिले हैं।
14. निम्नलिखित में कौन-सा सुमेलित नहीं है?
   (1) मुद्राराक्षस - विशाखदत्त
   (2) राजतरंगिणी - पाणिनि
   (3) हर्षचरित - बाणभट्ट
   (4) रघुवंशम् - कालिदास

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये-

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
A. अर्थशास्त्र	(i) चंदबरदाई
B. विक्रमांकदेवचरित	(ii) कौटिल्य
C. पृथ्वीराजरासो	(iii) बिल्हण
D. परिशिष्टपर्वन	(iv) हेमचंद्र

कूट:

	A	B	C	D
(1)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(2)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(3)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(4)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

उत्तरमाला

1. (2)	2. (4)	3. (3)	4. (4)	5. (4)	6. (1)	7. (3)	8. (2)	9. (3)	10. (3)
11. (3)	12. (2)	13. (4)	14. (2)	15. (4)					

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में दीजिये)

1. घोसुंडी अभिलेख का क्या महत्त्व है? **RAS (Mains) 2016**
2. राजतरंगिणी
3. अभिलेख
4. मुद्राराक्षस
5. हाथीगुंफा अभिलेख

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. इतिहास में सिक्कों का योगदान।
2. राजस्थान के पुरालेख स्रोत

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में विदेशी लेखकों के साहित्य का महत्त्व देशी लेखकों के साहित्य के बराबर ही है। विवेचना कीजिये।
2. हालाँकि, साहित्यिक स्रोत एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं, परंतु इतिहास के पुनर्निर्माण में उनकी कुछ गंभीर सीमाएँ हैं। बताइये कि किस तरह पुरातात्त्विक स्रोत इन सीमाओं के संदर्भ में पूरक का कार्य करते हैं।
3. प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में अभिलेखों तथा सिक्कों के महत्त्व की समीक्षा कीजिये।
4. पुरालेखीय स्रोतों में राजनीतिक इतिहास की अपेक्षा कला और संस्कृति अधिक प्रतिबिंबित हैं। टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

पाषाणयुगीन संस्कृति (Stone Age Culture)

पाषाण युग इतिहास का वह काल है जब मानव का जीवन पत्थरों (पाषाण) पर अत्यधिक आश्रित था। उदाहरण के लिये पत्थरों से शिकार करना, पत्थरों की गुफाओं में शरण लेना, पत्थरों से आग पैदा करना इत्यादि।

2.1 पुरापाषाण काल *(Paleolithic Age)*

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अतिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था। इस युग में धरती बर्फ से ढँकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है–

(क) निम्न पुरापाषाण काल : (5,00,000 ई.पू. से 50,000 ई.पू. के मध्य)

(ख) मध्य पुरापाषाण काल : (50,000 ई.पू. से 40,000 ई.पू. के मध्य)

(ग) उच्च पुरापाषाण काल : (40,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. के मध्य)

अपवादस्वरूप दक्कन के पठार में मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल दोनों के औज़ार मिलते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास चार्ट

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल के लक्षण
- लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं।
- पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध।
- उदाहरण : पाषाण काल

आद्य ऐतिहासिक काल के लक्षण
- लिखित साक्ष्य उपलब्ध।
- लेकिन लिपि गूढ़ एवं अपठनीय।
- उदाहरण : सैंधव सभ्यता

ऐतिहासिक काल के लक्षण
- पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों साक्ष्यों के आधार पर निर्धारण।

पाषाण काल:

पुरापाषाण काल (समयावधि : 5 लाख ई.पू. से 10 हज़ार ई.पू. तक)

मध्य पाषाण काल (समयावधि : 9 हज़ार ई.पू. से 4 हज़ार ई.पू. तक)

नवपाषाण काल (समयावधि : 7 हज़ार ई.पू. से 1 हज़ार ई.पू. तक)

पुरापाषाण काल:

निम्न पुरापाषाण काल (500000 ई.पू.–50000 ई.पू.)

मध्य पुरापाषाण काल (50000 ई.पू.–40000 ई.पू.)

उच्च पुरापाषाण काल (40000 ई.पू.–10000 ई.पू.)

पुरापाषाण काल के औज़ार *(Paleolithic tools)*

काल	औज़ार (मुख्य)
निम्न पुरापाषाण काल	हाथ की कुल्हाड़ी, तक्षणी, काटने का औज़ार
मध्य पुरापाषाण काल	काटने वाले औज़ार (फलक, वेधनी, खुरचनी)
उच्च पुरापाषाण काल	तक्षणी और खुरचनी

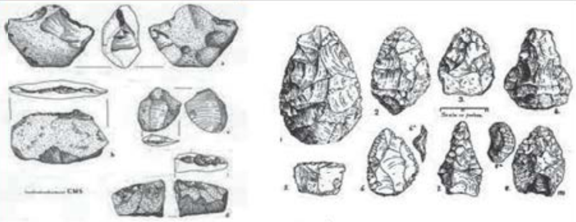

पुरापाषाणकालीन औज़ार

अध्याय
3

सिंधु घाटी की सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

सिंधु घाटी की सभ्यता का उद्भव ताम्रपाषाण काल में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ था, जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। इस काल की सभी संस्कृतियों में सैंधव सभ्यता सबसे विकसित, विस्तृत और उन्नत अवस्था में थी। इसे हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization) भी कहते हैं क्योंकि सर्वप्रथम 1921 ई. में हड़प्पा नामक स्थान से ही इस संस्कृति के संबंध में जानकारी मिली थी। सैंधव सभ्यता अनुकूलता के मध्य उत्पन्न हुई थी जिसका ज्ञान उत्खनन एवं अनुसंधान द्वारा होता है। यह एक नगरीय सभ्यता थी, क्योंकि इसके पुरातात्त्विक अवशेषों से परिवहन, व्यापार, तकनीकी, उत्पादन एवं नियोजित नगर व्यवस्था के तत्त्व प्राप्त होते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के विकास के संबंध में बहुत सारे विद्वानों ने 'सांस्कृतिक विसरण' के सिद्धांत को अधिक महत्त्व दिया। ई.जे.एच. मैके.ने सुमेर के लोगों के आप्रवर्जन को सिंधु सभ्यता के अभ्युदय का कारण बतलाया। मॉर्टिमर व्हीलर ने लोगों के स्थान पर विचारों के आगमन को महत्त्वपूर्ण बतलाते हुए कहा कि हड़प्पावासियों के समक्ष यह मॉडल उपस्थित था। अमलानंद घोष के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व-हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता के परिणामस्वरूप हुआ।

3.1 उद्भव एवं विस्तार *(Emergence and expansion)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव *(Emergence of Harappan civilization)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। विस्तृत खोजों के बावजूद इस सभ्यता के उद्भव तथा विकास के संदर्भ में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई है। उद्भव की प्रक्रिया को जानने में कई सारी व्यावहारिक समस्याएँ हैं, जैसे- क्षैतिज उत्खनन का न होना, ऊर्ध्वाधर खनन भी जलस्तर के ऊपर तक होना, लिपि का अध्ययन नहीं हो पाना आदि।

इस प्रकार आवश्यक साक्ष्यों का अभाव, जैसे साहित्यिक स्रोतों का अनुपलब्ध होना एवं पुरातात्त्विक स्रोतों द्वारा अपर्याप्त सूचना देना हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की व्याख्या में एक बड़ी समस्या है। इस कारण से इस सभ्यता के उद्भव के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किये हैं।

1. विदेशी उत्पत्ति से संबंधित मत

इस मत के प्रतिपादक **मार्टिमर व्हीलर** और **गार्डन चाइल्ड** जैसे इतिहासकार हैं। इसके लिये इन्होंने **सांस्कृतिक विसरण** का सिद्धांत प्रयुक्त किया। अन्नागार, गढ़ी तथा बुर्ज में प्रयुक्त शहतीरों के आधार पर मेसोपोटामिया से संबंध जोड़ा जाता है। उसी प्रकार बलूचिस्तान से प्राप्त मिट्टी के ढेरों की तुलना मेसोपोटामिया से प्राप्त जिगुरत (मंदिर) से की गई है। इनका मानना है कि मेसोपोटामिया से नगरीय सभ्यता के गुण भारत पहुँचे, लेकिन पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके विपरीत हैं। हड़प्पा नगर-योजना मेसोपोटामिया से कहीं अधिक विकसित थी। हड़प्पा में पकी हुई ईंटों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। हड़प्पाई मुहर, लिपि, औज़ार, मृद्भांड आदि मेसोपोटामिया और मिस्र से भिन्न हैं। हड़प्पाई लिपि चित्रात्मक थी तो मेसोपोटामियाई लिपि कीलनुमा।

अत: हड़प्पा सभ्यता की मौलिकता के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका उद्भव महज़ विदेशी प्रेरणा से नहीं हुआ, हालांकि इस पर विदेशी प्रभाव को पूरी तरह से नकारा भी नहीं जा सकता है।

2. द्रविड़ संस्कृति से उद्भव

कुछ विद्वानों का मत है कि आर्यों के आगमन से पूर्व द्रविड़ लोग इस क्षेत्र में निवास करते थे। यहाँ से प्राप्त भूमध्य-सागरीय प्रजाति के कंकालों को **'द्रविड़ों'** से जोड़ा गया है। साथ ही हड़प्पाई लिपि को भी द्रविड़ लिपि से जोड़ा गया है। इसके अलावा धार्मिक क्रियाकलाप, जैसे– लिंग पूजा, आराध्य देव की पूजा, मातृदेवी की पूजा, स्नान का महत्त्व आदि के आधार पर भी हड़प्पा संस्कृति पर द्रविड़ संस्कृति के प्रभाव को दर्शाने का प्रयास किया गया है। लेकिन आर्यों का आक्रमण अनैतिहासिक सिद्ध हो जाने के कारण केवल द्रविड़ संस्कृति से हड़प्पा के जुड़ाव का मत उचित प्रतीत नहीं होता है।

अध्याय
4

वैदिक काल
(Vedic Age)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात् भारत में जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई, उसके विषय में हमें संपूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिये इस काल का नामकरण **वैदिक काल** हुआ है। वेदों में ऋग्वेद सर्व प्राचीन होने के साथ-साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूँकि इस संस्कृति के प्रवर्तक आर्य लोग थे, इसलिये इसे कभी-कभी **आर्य सभ्यता** या **आर्य संस्कृति** का नाम भी दिया जाता है। यहाँ आर्य से अभिप्राय है **श्रेष्ठ, अभिजात, कुलीन** आदि। वैदिक काल अपने-आप में भारतीय इतिहास के लगभग हज़ार वर्ष (1500 ई.पू. – 600 ई.पू.) को समेटे हुए है। वैदिक काल का विभाजन ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल (1500 ई.पू. –1000 ई.पू.) तथा उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.-600 ई.पू.) के रूप में हुआ है।

4.1 ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.–1000 ई.पू.)
[Rigvedic Age (1500 B.C.–1000 B.C.)]

जानकारी के स्रोत *(Sources of information)*

भारत में आर्यों के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत **वैदिक साहित्य** है। कुछ अन्य स्रोत भी हैं, उनमें प्रमुख स्थान पुरातत्त्व का है, जो मात्र साहित्यिक स्रोतों पर आधारित विश्लेषण की पुष्टि करने, परिष्कृत और रूपांतरित करने में सहायक हुआ है।

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

ऋग्वैदिक काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत ऋग्वेद है। इसकी रचना अनुमानतः 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य मानी जाती है। इसमें 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसके कुल 10 मंडलों में से 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश हैं। प्रथम और दशम मंडल सबसे बाद में जोड़े गए मालूम होते हैं। इस वेद में 'आर्य' शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है। ऋग्वेद की अनेक बातें **अवेस्ता** से मिलती हैं। **अवेस्ता** ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। दोनों ग्रंथों में बहुत से देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

मंडल	रचयिता ऋषि
प्रथम मंडल	ऋषिगण
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठम मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
अष्टम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	ऋषिगण
दशम मंडल	ऋषिगण

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

1. **बोगाजकोई अभिलेख या मितन्नी अभिलेख (1400 ई.पू.):** इस अभिलेख में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं– इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
2. **कस्सी अभिलेख (1600 ई.पू.):** इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों की एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
3. **चित्रित धूसर मृद्भांड (Painted grey wares–P.G.W.)**

अध्याय 5

छठी शताब्दी ई.पू. का काल (महाजनपद काल) [Era of the Sixth Century B.C. (Mahajanpada Age)]

छठी शताब्दी ई.पू. का काल भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में इस शताब्दी में सभी क्षेत्रों में अपूर्व क्रांतियाँ हुईं और सर्वत्र एक नई चेतना का उदय हुआ। इसी शताब्दी में भारत में राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई और मगध में साम्राज्यवाद की नींव पड़ी। इस काल से पूर्व का काल राजनीतिक अंतर्विरोधों का काल था। नवीन धर्मों यथा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का उदय इसी काल में हुआ। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्रांति का युग था, फलतः द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया भी इसी काल में सामने आई। लोक भाषाओं का उद्भव तथा सामाजिक-धार्मिक स्थिति में नियमन हेतु **सूत्र-साहित्य** की रचना भी इसी काल में हुई। इसी बहुमुखी विकास के कारण इस काल का भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

5.1 धार्मिक आंदोलनः जैन धर्म व बौद्ध धर्म *(Religious Movement: Jainism and Buddhism)*

ई.पू. छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदान में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। लगभग सभी धार्मिक संप्रदायों का विरोध धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध था। एक दृष्टि से अगर देखा जाए तो छठी शताब्दी ई.पू. के ऐसे धर्म सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि उत्तर वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन सामाजिक विद्वेष के वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए परिवर्तन, धार्मिक आडंबर आदि ने सुधार आंदोलन की भूमिका तैयार की। इस युग के लगभग 62 संप्रदाय (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार) ज्ञात हैं, जिनमें बौद्ध धर्म (गौतम), जैन धर्म (महावीर), नियतिवाद (मक्खलि गोशाल) आदि प्रमुख हैं। इनमें से जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, जिन्होंने अपने उपदेशों तथा कार्यों से समाज को प्रभावित किया। इन्होंने जहाँ वैदिक धर्म की कुरीतियों तथा अतिवादी पंथ की आलोचना की, वहीं सामाजिक समस्या के समाधान का विकल्प भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि इन पंथों की जड़ें भारतीय समाज तथा संस्कृति में गहरे पैठ कर सकीं।

उद्भव के कारण *(Causes of emergence)*

वैदिकोत्तर काल में समाज स्पष्टतः चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभाजित था तथा उनके कर्त्तव्य भी अलग-अलग निर्धारित थे। इस बात पर ज़ोर दिया जाता था कि वर्ण जन्म-मूलक है। ब्राह्मण, जिन्हें पुरोहितों और शिक्षकों का कर्त्तव्य सौंपा गया था, समाज में अपना स्थान सबसे ऊँचा होने का दावा करते थे। वे कई विशेषाधिकारों के दावेदार थे जैसे दान लेना, करों से छुटकारा आदि। वर्णक्रम में क्षत्रियों का स्थान दूसरा था। वे शासन करते थे और किसानों से वसूले गए करों पर जीते थे। वैश्य खेती, पशुपालन और व्यापार करते थे और ये ही मुख्य करदाता थे। शूद्रों का कर्त्तव्य ऊपर के तीन वर्णों की सेवा करना था और उन्हें वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित रखा गया था। शूद्रों को स्वभाव से क्रूर, लोभी कहा गया है और उन्हें कुछ अस्पृश्य भी माना जाता था। वर्ण व्यवस्था में जो जितने ऊँचे वर्ण का होता था, वह उतना ही शुद्ध और सुविधाकारी समझा जाता था।

यह स्वाभाविक ही था कि इस तरह के वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा हो। वैश्यों और शूद्रों में इसकी कैसी प्रतिक्रिया थी यह जानने का कोई साधन नहीं है। परंतु क्षत्रिय लोग, जो शासक के रूप में काम करते थे, ब्राह्मणों के धर्म विषयक प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे। ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना नए धर्मों के उद्भव का एक प्रमुख कारण बना। जैन धर्म के प्रमुख वर्धमान महावीर और बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय वंश के थे और दोनों ने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी।

600 ई.पू. के आस-पास मध्य गंगा के मैदानों में लोहे का प्रयोग होने लगा और लोग भारी संख्या में बसने लगे। लोहे के औज़ारों का प्रयोग करके जंगलों की सफाई, खेती आदि संभव हुई। लोहे के फाल वाले हलों पर आधारित कृषि-मूलक

अध्याय
6

मौर्य साम्राज्य (Maurya Empire)

मौर्य साम्राज्य की जानकारी के लिये हमारे पास साहित्यिक और पुरातात्विक दोनों प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। जहाँ साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का **अर्थशास्त्र**, विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस**, मेगास्थनीज की **इंडिका**, बौद्ध साहित्य (दीपवंश, दिव्यावदान), जैन साहित्य और पुराण आदि महत्त्वपूर्ण हैं, वहीं पुरातात्त्विक स्रोतों में **अशोक के अभिलेख** और विभिन्न वस्तुओं के अवशेष जैसे– बर्तन, सिक्के आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

- **अर्थशास्त्र:** कौटिल्य द्वारा रचित यह पुस्तक मौर्यकालीन **राजनीति और शासन** के बारे में जानकारियाँ देती है। कौटिल्य (चाणक्य) चंद्रगुप्त मौर्य (मौर्य वंश का संस्थापक) का **प्रधानमंत्री** था।
- **मुद्राराक्षस:** चंद्रगुप्त मौर्य के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य ने जो चालें चलीं उनकी विस्तृत कथा **मुद्राराक्षस** नामक नाटक में है जिसकी रचना **विशाखदत्त** ने की है। साथ ही यह पुस्तक चंद्रगुप्त के समय की सामाजिक-आर्थिक दशा पर भी प्रकाश डालती है।
- **इंडिका:** मेगास्थनीज की इंडिका से हमें मौर्यों के विस्तृत प्रशासन तंत्र की जानकारी मिलती है। इस पुस्तक से मौर्य काल के प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है। मेगास्थनीज विशेष तौर पर दो शहरों पाटलिपुत्र और तक्षशिला के नगर प्रशासन की चर्चा करता है। पाटलिपुत्र में बुद्धिजीवियों की एक परिषद शासन का प्रबंध देखती थी। यह परिषद नगर श्रेष्ठी (मेयर) का चयन करती थी। प्रशासन के संचालन के लिये अलग-अलग विषयों पर 6 समितियाँ होती थीं। हर समिति में 5–5 सदस्य होते थे। मेगास्थनीज की इंडिका समकालीन भारतीय समाज की भी रोचक जानकारी देती है। उसके अनुसार समाज में 7 वर्ण थे। यद्यपि मेगास्थनीज की यह समझ एक बड़े भटकाव का शिकार नज़र आती है।
- **बौद्ध साहित्य:** दीपवंश से अशोक द्वारा बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने की भूमिका के बारे में पता चलता है। अन्य बौद्ध साहित्य (महावंश, दिव्यावदान) तथा जैन साहित्य (कल्पसूत्र, परिशिष्टपर्वन) से भी मौर्य साम्राज्य के विस्तार पर प्रकाश पड़ता है।
- पुराण मौर्य राजाओं और घटनाओं के बारे में बताते हैं।

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें अशोक के अभिलेख, इससे पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के अभिलेख, रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख महत्त्वपूर्ण हैं, जिनमें मौर्यकालीन राजनीतिक, प्रशासनिक, धार्मिक, सामाजिक आदि दशाओं का वर्णन मिलता है।

अशोक पूर्व के अभिलेखों में **सोहगौरा** तथा **महास्थान** का अभिलेख है जो चंद्रगुप्त मौर्य के काल से संबंधित हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य काल में दुर्भिक्ष (अकाल) पड़ता था। अशोक के अभिलेखों को हम निम्नलिखित तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं–

वृहद् शिलालेख- अशोक के 14 **वृहद् शिलालेखों** से तात्पर्य अशोक के 14 आदेशों से है जो विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। ये स्थान हैं- **कल्सी (देहरादून)**, शाहबाज़गढ़ी, मानसेहरा, गिरनार, धौली, जौगढ़, सोपारा, एर्रगुड्डी (एरागुडि), सन्नाती (कर्नाटक)। इसमें धौली और जौगढ़ में दो **पृथक् शिलालेख** भी खुदे हैं। **लघु शिलालेख** गुर्जरा, मास्की, भाब्रू आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। अशोक के **स्तंभलेखों** की संख्या 7 है जो **दिल्ली-टोपरा, दिल्ली-मेरठ** आदि जगहों से प्राप्त हुए हैं। राजकीय घोषणाओं के रूप में कुछ **लघु स्तंभलेख** साँची, कौशांबी, सारनाथ, रुम्मिनदेई से भी मिले हैं। बराबर की पहाड़ी में अशोक के गुहालेख भी मिले हैं।

अध्याय
7

मौर्योत्तर काल
(Post–Mauryan Age)

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता नष्ट हो गई। मौर्य वंश के पतन और गुप्त वंश के उत्थान के बीच जो पाँच शताब्दियाँ बीतीं, उनमें बहुत राजनीतिक उथल-पुथल हुई। इस काल की राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण है- बहुराज्यीय व्यवस्था। इस व्यवस्था के अंतर्गत उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक एक विशाल मौर्य साम्राज्य की जगह अनेक (छोटे-छोटे) राज्य दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ राज्य, जैसे- कुषाण और सातवाहन, साम्राज्य के स्तर पर पहुँच गए और अधिकांश राज्य सीमित स्तर तक ही रहे। बहुराज्यीय व्यवस्था को प्रेरित करने वाले कारकों में प्रमुख थे- मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तराधिकारी राज्यों का उद्भव (उदाहरण के लिये शुंग वंश), विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप स्थापित राज्य (उदाहरण के लिये इंडो-ग्रीक राजवंश, शक, कुषाण आदि), नए क्षेत्रों में राज्य निर्माण इत्यादि।

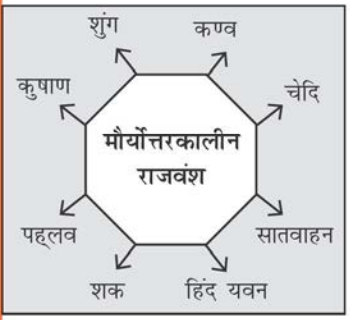

7.1 शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश *(Sung Dynasty, Kanva Dynasty, Chedi and Satavahana Dynasty)*

शुंग वंश *(Sung dynasty)*

मौर्यों का उत्तराधिकारी वंश शुंग वंश हुआ। इस वंश का संस्थापक **पुष्यमित्र शुंग** था। उसने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर मगध में **शुंग वंश** की नींव डाली। उसे ब्राह्मणवंशीय माना जाता है। बौद्ध ग्रंथों में उसे बौद्ध विरोधी सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। एक विवरण के अनुसार, अशोक के द्वारा जिन 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण कराया गया पुष्यमित्र शुंग ने उन्हें नष्ट कर दिया। किंतु यह महज़ साहित्यिक विवरण है, इस संबंध में पुरातात्विक विवरण कुछ और कहते हैं। इनके अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने भरहुत स्तूप का निर्माण करवाया तथा साँची स्तूप में वेदिका स्थापित करवाई।

ऐसा माना जाता है कि पुष्यमित्र शुंग के काल में यवनों का निरंतर आक्रमण हो रहा था। उसने यवनों के विरुद्ध सफलता भी प्राप्त की थी तथा अपनी विजय के उपलक्ष्य में अश्वमेध यज्ञ संपन्न कराया था। यवन आक्रमण की चर्चा कालिदास कृत **मालविकाग्निमित्रम्**, पतंजलि के **महाभाष्य** आदि में मिलती है। लगभग 185 से 75 ई.पू. के बीच शुंग वंश का शासन रहा था। शुंगों की राजधानी **विदिशा** तथा **पाटलिपुत्र** रही थी। पुराणों के अनुसार, पुष्यमित्र शुंग के लगभग दस उत्तराधिकारियों ने शासन किया था। उसका निकटस्थ उत्तराधिकारी अग्निमित्र था, जिसके सम्मान में कालिदास ने **मालविकाग्निमित्रम्** की रचना की। उसी का एक उत्तराधिकारी **भागभद्र** हुआ जिसके दरबार **विदिशा** में यूनानी शासक **एंटियालकीट्स** ने **हेलियोडोरस** को भेजा था। **हेलियोडोरस** ने ही **वासुदेव कृष्ण** के सम्मान में **विदिशा (बेसनगर)** में **गरुड़ ध्वज स्तंभ** की स्थापना की। इस वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था। इसकी हत्या 73 ई.पू. में **वासुदेव** ने कर दी और मगध की गद्दी पर **कण्व वंश** की स्थापना की।

कण्व वंश *(Kanva dynasty)*

अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके अमात्य वासुदेव ने की। इसकी जानकारी **हर्षचरित** से प्राप्त होती है। वासुदेव ने जिस नवीन वंश की स्थापना की, उसे कण्व वंश के नाम से जाना जाता है। यह भी ब्राह्मण वंश था। कण्व वंश के अंतर्गत चार शासक हुए। वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुशर्मन। लगभग 75 ई.पू. से 30 ई.पू. तक कण्व वंश का शासन रहा। पुराणों के अनुसार, कण्वों ने 45 वर्षों तक शासन किया। अंतिम शासक **सुशर्मन** की हत्या 30 ई.पू. में **सिमुक** ने कर दी और एक नवीन ब्राह्मण वंश **सातवाहन वंश** की नींव डाली।

अध्याय
8

संगम काल
(Sangam Age)

ऐतिहासिक काल के आरंभ में तमिलों के संबंध में जो कुछ जानकारी प्राप्त होती है, उसका स्रोत संगम साहित्य है। 'संगम' से तात्पर्य है- **कवियों का सम्मेलन,** जो संभवतः किसी सामंत या राजा के आश्रय में आयोजित होता था। ऐसे सम्मेलन में रचित साहित्य **संगम साहित्य** के नाम से जाना जाता है। ज्ञात स्रोतों के अनुसार, **पांड्य शासकों** के अधीन तमिल क्षेत्र में **तीन संगमों** का आयोजन किया गया।

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पांड्य शासक	मदुरा
द्वितीय	तोलकाप्पियर (संस्थापक अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि)	पांड्य शासक	कपाटपुरम्
तृतीय	नक्कीरर	पांड्य शासक	उत्तरी मदुरा

प्रथम संगम **मदुरा** नामक स्थान पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की थी। अगस्त्य ऋषि को ही **दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति के प्रसार** का श्रेय दिया जाता है। इस संगम के सदस्यों की संख्या 549 थी। इन्हें 89 पांड्य शासकों का संरक्षण मिला। प्रथम संगम की कोई रचना उपलब्ध नहीं है। यह संगम सबसे अधिक दिनों तक चला। द्वितीय संगम का आयोजन **कपाटपुरम्** नामक स्थान पर हुआ था, जिसके अध्यक्ष प्रारंभ में **अगस्त्य ऋषि** थे, परंतु बाद में उनका स्थान उनके शिष्य **तोलकाप्पियर** ने ले लिया। इस संगम में कुल 49 सदस्य थे। इसे 59 पांड्य शासकों का संरक्षण मिला। इसमें भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई, किंतु तोलकाप्पियर द्वारा रचित **तोलकाप्पियम** को छोड़कर शेष सारी रचनाएँ नष्ट हो गईं। इसी प्रकार तृतीय संगम का आयोजन **उत्तरी मदुरा** में हुआ। इसकी **अध्यक्षता नक्कीरर** ने की थी। इसमें 49 सदस्य थे। इन्हें 49 पांड्य राजाओं का संरक्षण मिला तथा कुल 449 कवियों को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति मिली। ईसा की आठवीं सदी में लिखी गई संगम की तमिल टीकाओं में कहा गया है कि तीनों संगम 9,990 वर्षों तक चलते रहे। उनमें 8,598 कवियों ने भाग लिया और 197 पांड्य राजा उनके संपोषक हुए। प्रथम संगम 4,400 वर्षों तक, द्वितीय संगम 3,700 वर्षों तक एवं तृतीय संगम लगभग 1,850 वर्षों तक चला। इन्हें अतिरंजना मात्र माना गया है, सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि मदुरा में संगम राजाश्रय में आयोजित होते थे। इन सम्मेलनों द्वारा रचित संगम साहित्य जो उपलब्ध है, लगभग 300 ई. और 600 ई. के बीच संकलित किया गया।

संगम साहित्य से हमें तमिल प्रदेश के **तीनों राज्यों चोल, चेर** तथा **पांड्य** का राजनीतिक विवरण मिलता है। उत्तर-पूर्व में चोल, दक्षिण-पश्चिम में चेर तथा दक्षिण-पूर्व और सुदूर दक्षिण में पांड्यों का राज्य स्थित था।

चोल राज्य *(Chola dynasty)*

संगमकालीन तीन प्रधान राज्यों में सर्वप्रथम चोलों का अभ्युदय हुआ। इनका क्षेत्र पेन्नार और वेल्लार नदियों के मध्य स्थित था। इस वंश का राजचिह्न **बाघ** था। चोलों की प्रारंभिक राजधानी **उत्तरी मनलूर** थी, लेकिन ऐतिहासिक युग में उरैयूर राजधानी हो गई। कालांतर में **तंजावुर** भी राजधानी बनी। चोल राज्य मध्यकाल के आरंभ में चोलमंडलम् (कोरोमंडल) कहलाता था। संगमकालीन चोल शासकों में **करिकाल** सबसे महत्त्वपूर्ण शासक था। करिकाल ने अपने समकालीन चेर तथा पांड्य राजाओं को परास्त किया तथा कावेरी नदी घाटी में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। करिकाल ने श्रीलंका पर भी विजय प्राप्त की। उसने पुहार या **कावेरीपत्तनम्** की स्थापना की और अपनी राजधानी उरैयूर से कावेरीपत्तनम् में स्थानांतरित की। उसने कावेरी नदी के किनारे बांध बनवाया। करिकाल के पश्चात् चोलों की शक्ति निर्बल पड़ने लगी। संगमकालीन चोल शासकों ने तीसरी-चौथी शताब्दी तक शासन किया। नौवीं शताब्दी के मध्य पुनः चोल सत्ता का उत्थान **विजयालय** के नेतृत्व में हुआ।

चेर राज्य *(Chera dynasty)*

चेर या केरल देश पांड्य क्षेत्र के पश्चिम और उत्तर में था। इसमें आधुनिक केरल राज्य का और तमिलनाडु का भाग सम्मिलित था। प्रथम चेर शासक **उदियनजेरल** था। इसका काल लगभग 130 ई. माना जाता है। इसके बाद नेदुनजेरल

अध्याय
9

गुप्त साम्राज्य (Gupta Empire)

तीसरी सदी में उत्तर भारत में कुषाणों तथा दक्कन में सातवाहनों के प्रभुत्व के अवसान के साथ देश में राजनीतिक विघटन का दौर आरंभ हुआ। ज्ञात होता है कि कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में सत्ता कुछ समय के लिये मुरुंडों के हाथों में आई। फिर मुरुंडों से गुप्तों ने सत्ता ग्रहण की।

संभवत: गुप्त लोग कुषाणों के अधीनस्थ शासक अथवा सामंत रहे थे। उनकी सफलता का महत्त्वपूर्ण कारण वह सैन्य तकनीक थी, जो उन्होंने कुषाणों से ग्रहण की। बिहार और उत्तर प्रदेश में अनेक जगह कुषाण पुरावशेषों के मिलने के ठीक बाद गुप्त पुरावशेष मिले हैं। गुप्तकालीन पुरावशेषों की प्राप्ति की दृष्टि से उत्तर प्रदेश सबसे समृद्ध स्थान सिद्ध होता है। संभवत: वे अपनी सत्ता का केंद्र प्रयाग को बनाकर पड़ोस के इलाकों में फैलते गए। गुप्त वंश के इतिहास की जानकारी के लिये साहित्यिक स्रोत के रूप में पुराण, स्मृतियाँ, बौद्ध ग्रंथ, विशाखदत्त कृत देवीचंद्रगुप्तम् एवं कालिदास की रचनाएँ प्रमुख हैं। पुराण से गुप्त वंश के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है। **देवीचंद्रगुप्तम्** से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय तथा विदेशी यात्रियों के संबंध में भी जानकारी मिलती है जिसमें चीनी यात्री फाह्यान का नाम प्रमुख है जो चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था।

पुरातात्विक स्रोतों के रूप में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चंद्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहालेख जिससे उसके साम्राज्य विजय का ज्ञान होता है, स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभ लेख जिससे हूण आक्रमण की जानकारी मिलती है, आदि प्रमुख हैं।

9.1 प्रारंभिक शासक *(Early Rulers)*

गुप्त राजवंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त वंश का दूसरा शासक हुआ।

चंद्रगुप्त-प्रथम (319– 334 ई.) *[Chandragupta–I (319–334 A.D.)]*

गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक **चंद्रगुप्त प्रथम** हुआ। वह ऐसा **प्रथम** शासक था जिसने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की तथा स्वर्ण सिक्के जारी किये। इसके राज्यारोहण (319–320 ई.) के साथ **गुप्त संवत्** का आरंभ माना जाता है।

चंद्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य का आरंभिक विस्तार किया, फिर अपनी स्थिति को मज़बूत करने के लिये उसने कूटनीतिक पद्धति का भी सहारा लिया। उसने उत्तर भारत के प्रमुख राज्य **लिच्छवि** की राजकुमारी **कुमार देवी** के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया। गुप्त संभवत: वैश्य थे इसलिये क्षत्रिय कुल में विवाह करने से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी।

समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख में समुद्रगुप्त को **लिच्छवि दौहित्र** अर्थात् लिच्छवि कन्या से उत्पन्न बताया गया है।

समुद्रगुप्त (335–380 ई.) *[Samudragupta (335–380 A.D.)]*

चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी **समुद्रगुप्त** (335–380 ई.) ने गुप्त साम्राज्य का अपार विस्तार किया।

समुद्रगुप्त एक महान साम्राज्यवादी था। उसने कई चरणों में अपना विजय अभियान पूरा किया। समुद्रगुप्त के विजय अभियान को पाँच चरणों में बाँटा जा सकता है। प्रथम चरण में उसने गंगा-यमुना दोआब के राज्यों का समूल नाश किया तथा प्रत्यक्ष रूप से अपने साम्राज्य में मिला लिया। द्वितीय चरण में उसने पंजाब के गणराज्य तथा कुछ सीमावर्ती राज्यों को जीता। जो गणराज्य मौर्य साम्राज्य के खँडहरों पर टिमटिमा रहे थे उन्हें समुद्रगप्त ने सदा के लिये बुझा दिया। तीसरे चरण में उसने विंध्य क्षेत्र में आटविक राज्यों पर विजय प्राप्त की। फिर चौथे चरण में उसने दक्षिण के बारह राज्यों को जीता। दक्षिण में उसने पल्लवों से अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार कराई। अंतिम चरण में उत्तर-पश्चिम में कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया। उसकी बहादुरी एवं युद्ध कौशल के कारण ही **वी.ए. स्मिथ** ने उसे **भारत का नेपोलियन** कहा है। हालाँकि, समुद्रगुप्त की विजयों की सूचना का आधार **हरिषेण** लिखित प्रयाग प्रशस्ति है, यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि हरिषेण एक दरबारी लेखक

अध्याय
10

गुप्तोत्तर काल (Post–Gupta Age)

गुप्त वंश के पतन के बाद भारतीय प्रायद्वीप के राजनीतिक इतिहास में नवीन प्रवृत्ति का आविर्भाव हुआ। इस प्रवृत्ति में विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव था। 550 ई. के लगभग गुप्त साम्राज्य के विखंडित होने के साथ ही कई सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करते हुए नवीन राजवंशों की स्थापना की।

10.1 प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

गुप्तोत्तर काल की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश था जो अरबों के माध्यम से हुआ। हर्षवर्धन के रूप में सशक्त शक्ति के उदय होने तक उत्तरी तथा पश्चिमी भारत की राजनीति में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों का उदय हुआ।

प्रमुख राजवंश

- वल्लभी का मैत्रक वंश
- मालवा का यशोधर्मन
- पंजाब के हूण
- मगध/मालवा के उत्तरगुप्त
- कन्नौज का मौखरि वंश
- थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

वल्लभी का मैत्रक वंश *(Maitraka dynasty of Vallabhi)*

मैत्रक वंश का उदय गुजरात के वल्लभी में हुआ। इस वंश की स्थापना भट्टार्क नामक गुप्तकालीन सैनिक अधिकारी के द्वारा की गई। इस वंश के शासक बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र (काठियावाड़) में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों में धरसेन, द्रोणसिंह और ध्रुवसेन प्रमुख शासक थे। इस वंश के शासकों ने अपनी **राजधानी वल्लभी** को बनाया। **ध्रुवसेन-द्वितीय** इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह हर्षवर्धन का समकालीन था। हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन-द्वितीय से कर मैत्रकों से संबंध स्थापित किये। ध्रुवसेन के काल में वल्लभी शिक्षा तथा व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। इसी समय चीनी यात्री ह्वेनसांग ने **वल्लभी की यात्रा** की थी। मैत्रक वंश का अंतिम शासक शिलादित्य था।

वल्लभी विश्वविद्यालय

इतिहास का अवलोकन करने के उपरांत भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय तक्षशिला तथा सबसे विख्यात विश्वविद्यालय नालंदा को माना जाता है, परंतु वल्लभी विश्वविद्यालय की अपनी अलग पहचान थी। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ के विद्यार्थी प्रशासनिक पदों पर सबसे अधिक नियुक्त होते थे। चीनी यात्री इत्सिंग सातवीं शताब्दी में वल्लभी आए तथा इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की। यहाँ के आचार्यों में गणभूति और स्थिरमति का नाम उल्लेखनीय है।

मालवा का यशोधर्मन *(Yashodharman of Malwa)*

मालवा के यशोधर्मन का उदय छठी शताब्दी के आरंभिक काल में हुआ। यशोधर्मन की उपलब्धियों का वर्णन हमें मंदसौर के दो अभिलेखों से प्राप्त होता है। मंदसौर प्रशस्ति यशोधर्मन का चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है। यशोधर्मन द्वारा हूणों की पराजय उसकी महानतम उपलब्धियों में से एक थी। यशोधर्मन का राज्य पूर्व में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र नदी) से लेकर पश्चिम में समुद्र पर्वत तक विस्तृत था। मंदसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेंद्र' कहा गया।

यशोधर्मन का दूसरा नाम विष्णुवर्धन था। उसने राजाधिराज, परमेश्वर और नराधिपति की उपाधि धारण की थी। **वह शिवभक्त था।** अभिलेखों में उसके अच्छे शासन और सद्गुणों के कई उल्लेख हैं। उसकी तुलना मनु, भरत, अलर्क और मांधाता से की गई है। यशोधर्मन ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवंशी तथा सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का वंशज कहा है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456

RAS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**5-16**
1.1	पुरातात्त्विक स्रोत	7
1.2	साहित्यिक स्रोत	9
1.3	विदेशी यात्रियों के वृत्तांत/विवरण	10
1.4	राजस्थान इतिहास के स्रोत	11
2.	**पाषाणयुगीन संस्कृति**	**17-25**
2.1	पुरापाषाण काल	17
2.2	मध्य पाषाण काल	18
2.3	नवपाषाण काल : कृषि और पशुपालन	20
2.4	राजस्थान का पाषाणकाल	22
3.	**सिंधु घाटी की सभ्यता**	**26-42**
3.1	उद्‍भव एवं विस्तार	26
3.2	सैंधव सभ्यता का नगर नियोजन	28
3.3	सैंधवकालीन आर्थिक व्यवस्था	30
3.4	सैंधव सभ्यता में धार्मिक जीवन	31
3.5	सैंधवकालीन सामाजिक जीवन	31
3.6	प्रौद्योगिकी, कला एवं शिल्प	32
3.7	हड़प्पा सभ्यता का पतन	33
3.8	ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	34
3.9	राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ	36
4.	**वैदिक काल**	**43-56**
4.1	ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.-1000 ई.पू.)	43
4.2	उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.-600 ई.पू.)	49
5.	**छठी शताब्दी ई.पू. का काल (महाजनपद काल)**	**57-74**
5.1	धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म	57
5.2	महाजनपद तथा मगध का उत्थान	65
5.3	ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण	69
6.	**मौर्य साम्राज्य**	**75-95**
6.1	चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक	76

- **ख्यात साहित्य :** यह इतिहास की जानकारी प्रदान करता है। जैसे–
    - **नैणसी री ख्यात :** मुहणोत नैणसी द्वारा लिखित, जिसमें राज्यों के मध्य परस्पर संघर्ष, राजपूत राज्यों द्वारा मुगलों से लड़े गए युद्धों का वर्णन तथा शासकों की विभिन्न शाखाओं पर प्रकाश डाला गया है।
    - **बाँकीदास री ख्यात :** जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि बाँकीदास द्वारा रचित, जिसमें जोधपुर की स्थापना का वर्णन है।
    - **दयालदास री ख्यात/बीकानेर रे राठौड़ाँ री ख्यात :** राव बीका से महाराज सरदार सिंह के समय तक का वर्णन, बीकानेर की स्थापना, इसका अन्य शक्तियों से संघर्ष, बीकानेर के शासकों व सामंतों के संबंधों का उल्लेख।
    - **मुंडियार री ख्यात/राठौड़ों री ख्यात :** मारवाड़ के मुगलों के साथ संबंधों, सभी शासकों के जन्म, राज्याभिषेक, मृत्यु का उल्लेख, चारण जाति के व्यक्ति द्वारा रचित।
    - **कविराजा की ख्यात :** जोधपुर महाराज जसवंत सिंह प्रथम के शासनकाल तक का वर्णन।
- **राजस्थानी भाषा के अन्य ऐतिहासिक स्रोत :** पद्मावत, कान्हड़दे प्रबंध, राजविलास, सूरज प्रकाश, बुद्धिविलास, वंशभास्कर, वीर सतसई, राजरूपक, दलपत विलास, तारीख-ए-मुबारकशाही, गज गुणारूपक, अकबरनामा, आईन-ए-अकबरी, तारीखे शेरशाही, बाबरनामा इत्यादि।
- **फारसी-उर्दू साहित्य :** अमीर खुसरो रचित खर्जाइनुल फुतुह, पृथ्वीराज राठौड़ रचित वेलि क्रिसन-रुक्मणी री, बीठू सूजा रचित राव जैतसी रो छंद, सदरउद्दीन हसन निज़ामी रचित ताज-उल-मासिर, गुलबदन बेगम रचित हुमायूँनामा, मिनहाज-उस-सिराज रचित तबकाते नासिरी, मोहम्मद कासिम हिंदूशाह द्वारा रचित तारीख-ए-फरिश्ता, जहाँगीर रचित तुजुक-ए-जहाँगीरी इत्यादि।
- **संस्कृत साहित्य :** नयनचंद्र सूरी रचित हम्मीर महाकाव्य, कुंभा के शिल्पी मंडन रचित राजवल्लभ, कान्ह व्यास रचित एकलिंग माहात्म्य, कवि जयानक रचित पृथ्वीराज विजय, रणछोड़ भट्ट रचित अमर काव्य वंशावली, पं. जीवधर रचित अमर सार, जैसलमेर के वर्णन हेतु मादी काव्य, सदाशिव रचित राजविनोद, कुंभा रचित मुख्य राजकोष, जगजीवन भट्ट रचित आजितोदय, करमचंद रचित वंशोत्कीर्तनकाव्यम् इत्यादि।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के मुख्यत: तीन स्रोत हैं- **पुरातात्त्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोत** तथा **विदेशी यात्रियों के विवरण।**
- अभिलेखों के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी)** कहते हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर मिलते हैं, ये लगभग 2500 ई.पू. के हैं। ये अब तक नहीं पढ़े जा सके हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं वे हैं, ई.पू. तीसरी सदी के **अशोक के शिलालेख।** सर्वप्रथम 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** ने इन्हें पढ़ने में सफलता पाई।
- सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स)** कहते हैं।
- सर्वप्रथम **भारतवर्ष** का उल्लेख **हाथीगुंफा** अभिलेख में हुआ है।
- 1400 ई.पू. के **बोगाज़कोई अभिलेख** से वैदिक देवता **इंद्र, मित्र, वरुण** और **नासत्य** (अश्विनी कुमार) के नाम मिलते हैं।
- मध्य भारत में भागवत् धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत **'हेलियोडोरस' के बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तंभ लेख** से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख **सोहगौरा** ताम्रपत्र अभिलेख है।
- भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी **भीतरी स्तंभ लेख** से प्राप्त होती है।
- सती प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य **एरण अभिलेख** (शासन भानुगुप्त) से प्राप्त होता है।

अध्याय
4

वैदिक काल
(Vedic Age)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात् भारत में जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई, उसके विषय में हमें संपूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिये इस काल का नामकरण **वैदिक काल** हुआ है। वेदों में ऋग्वेद सर्व प्राचीन होने के साथ-साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूँकि इस संस्कृति के प्रवर्तक आर्य लोग थे, इसलिये इसे कभी-कभी **आर्य सभ्यता** या **आर्य संस्कृति** का नाम भी दिया जाता है। यहाँ आर्य से अभिप्राय है **श्रेष्ठ, अभिजात, कुलीन** आदि। वैदिक काल अपने-आप में भारतीय इतिहास के लगभग हज़ार वर्ष (1500 ई.पू. – 600 ई.पू.) को समेटे हुए है। वैदिक काल का विभाजन ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल (1500 ई.पू. –1000 ई.पू.) तथा उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.-600 ई.पू.) के रूप में हुआ है।

4.1 ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.–1000 ई.पू.)
[Rigvedic Age (1500 B.C.–1000 B.C.)]

जानकारी के स्रोत *(Sources of information)*

भारत में आर्यों के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत **वैदिक साहित्य** है। कुछ अन्य स्रोत भी हैं, उनमें प्रमुख स्थान पुरातत्त्व का है, जो मात्र साहित्यिक स्रोतों पर आधारित विश्लेषण की पुष्टि करने, परिष्कृत और रूपांतरित करने में सहायक हुआ है।

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

ऋग्वैदिक काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत ऋग्वेद है। इसकी रचना अनुमानतः 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य मानी जाती है। इसमें 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसके कुल 10 मंडलों में से 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश हैं। प्रथम और दशम मंडल सबसे बाद में जोड़े गए मालूम होते हैं। इस वेद में 'आर्य' शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है। ऋग्वेद की अनेक बातें **अवेस्ता** से मिलती हैं। **अवेस्ता** ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। दोनों ग्रंथों में बहुत से देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

मंडल	रचयिता ऋषि
प्रथम मंडल	ऋषिगण
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठम मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
अष्टम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	ऋषिगण
दशम मंडल	ऋषिगण

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

1. **बोगाजकोई अभिलेख या मितन्नी अभिलेख (1400 ई.पू.):** इस अभिलेख में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं– इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
2. **कस्सी अभिलेख (1600 ई.पू.):** इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों की एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
3. **चित्रित धूसर मृद्भांड (Painted grey wares–P.G.W.)**